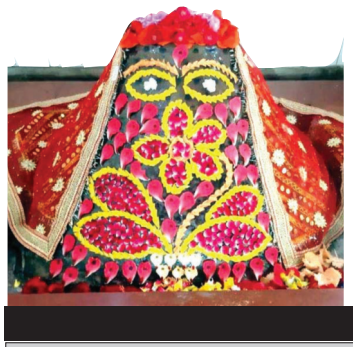

।। श्री गणेशाय नमः ।।

हिन्दी पाक्षिक Fort Nightly

Baat Hindustan ki

बात हिन्दुस्तान की

Baat Hindustan Ki

R N I No. : WBHIN / 2021 / 84049

● विक्रम संवत 2081 चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टमी, 16-30 अप्रैल 2024 , 16-30 April 2024, ● वर्ष 3 (Year-3), ● अंक 23 ● पृष्ठ 4 (Page-4) ● मूल्य रु.2 (Price 2/-)

इजरायल-ईरान टेंशन खत्म करने में क्या भारत निभा सकता है अहम रोल

नई दिल्ली : इजरायल और ईरान की तनातनी पर दुनिया के देशों की नजर है। इस संघर्ष का कितना खौफनाक नतीजा सामने आएगा, दुनिया के अधिकांश देशों के नागरिक इस बात को लेकर चिंतित है। बीते शुक्रवार की सुबह दुनिया को ये खबर मिली कि इजरायल ने ईरान के इस्फ़हान इलाके में मिसाइल हमला कर दिया। वहां ईरान की परमाणु सुविधाएं हैं। हमले में कितना नुकसान हुआ, ये अभी साफ नहीं है। पश्चिम एशिया में 7 अक्टूबर 2023 से हालात लगातार बिगड़ते जा रहे हैं। हमास के हमले ने इजरायल की खुफिया और सुरक्षा एजेंसियों को चौंका दिया था। इस हमले में लगभग 1200 इजरायली मारे गए और 200 से ज्यादा बंधक बना लिए गए। इजरायल ने इसे दूसरे विश्वयुद्ध के बाद यहूदियों के सबसे बड़े नुकसान के रूप में देखा। ये 2008 से चले आ रहे इजरायल-हमास के झगड़ों से कहीं ज्यादा गंभीर था। इजरायल ने अपनी ताकत दिखाने के लिए जवाबी कार्रवाई की, जिससे 6 महीने से ज्यादा चली लड़ाई में 30,000 से ज्यादा लोग मारे गए और गाजा में 10 लाख से ज्यादा फिलिस्तीनी बेघर हो गए।

अमेरिका भले ही पूर्वी भूमध्यसागर में दो युद्धपोतों के समूह तैनात कर चुका है, लेकिन हालात और बिगड़ गए हैं। हूती विद्रोहियों ने लाल सागर के रास्ते जहाजों पर हमला किया और शिपिंग को बाधित किया है. वहीं हिज्बुल्लाह ने रॉकेट और ड्रोन दागे हैं, जिससे उत्तरी इजरायल के करीब 70,000 लोग बेघर हो गए हैं। इजरायल ने भी दक्षिणी लेबनान की सीमा से लगे इलाकों में हिज्बुल्लाह के खिलाफ कार्रवाई तेज कर दी है। अमेरिका और ब्रिटेन ने कई अन्य देशों के साथ मिलकर 'ऑपरेशन प्रॉस्पेरिटी गार्जियन' चलाया है और हूती ठिकानों पर हमले किए हैं।

ईरान पर इजरायल के हमले की वजह क्या है?

इजरायल का मानना है कि ईरान हमास, हिजबुल्लाह और हाउती को मदद कर रहा है। इसी सिलसिले में इजरायल ने सीरिया की राजधानी दमिश्क में ईरानी वाणिज्य दूतावास परिसर में ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड के कई कमांडरों पर हमला कर उन्हें मार डाला। ईरान ने इसे अपने 'संप्रभु क्षेत्र' पर हमला माना। इससे पहले इजरायल सीरिया और लेबनान के रास्ते हिजबुल्लाह को भेजे जाने वाले सामानों पर हमला करता रहा है, लेकिन यह हमला उससे कहीं ज्यादा गंभीर था। जवाब में ईरान ने 300 ड्रोन, 30 क्रूज मिसाइल और 100 से ज्यादा बैलिस्टिक मिसाइलों से इजरायल पर हमला किया। 1973 के योम किप्पुर युद्ध के बाद यह किसी देश की ओर से सीधे तौर पर इजरायल पर किया गया पहला हमला था। 1948, 1967 और 1973 में अरब देशों के गठबंधन को इजरायल ने हरा दिया था। इसके बाद 1979 में मिस्र और 1994 में जॉर्डन के साथ शांति समझौते हुए। 2020 में अब्राहम एकॉर्ड के तहत इजरायल के यूएई, बहरीन, कतर और मोरक्को के साथ राजनयिक संबंध स्थापित हुए। जवाब में इजरायल ने ईरान के इस्फहान शहर पर सीमित हवाई हमला किया, जो यह दिखाता है कि वो ईरान की हवाई सुरक्षा को भेद सकता है।

आखिर कहां फंसा है पेच?

जब तक इजरायल-हमास लड़ाई कम होने की राह पर नहीं चलती, तब तक परेशानी बनी रहेगी, चाहे हालात और बिगड़ें या नहीं। फिलहाल ऐसा होता हुआ नहीं दिख रहा है। अमेरिका, मिस्र और कतर के बीच-बचाव की कोशिशों के बावजूद छह हफ्ते के युद्धविराम की बातचीत हफ्तों से रुकी हुई है।

इजरायल का लक्ष्य गाजा से हमास को खत्म करना है। लेकिन छह महीने की कोशिशों के बाद भी हजारों हमास लड़ाके अभी भी सक्रिय बताए जा रहे हैं, खासकर दक्षिण गाजा के रफाह इलाके में, जो अभी इजरायल की पहुंच से बाहर है। इससे बड़े पैमाने पर आम लोगों की मौतों को लेकर अंतरराष्ट्रीय चिंता बढ़ गई है। अफगानिस्तान में तालिबान के साथ अमेरिका के अनुभव और 1982 से 2000 के बीच दक्षिण लेबनान में हिज़्बुल्लाह के साथ इजरायल के खुद के कब्जे के अनुभव को देखते हुए हमास को पूरी तरह खत्म करने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

गाजा पर संकट बरकरार :- गाजा पर शासन करने के लिए हमास के अलावा किसी फिलिस्तीनी संगठन को मजबूत बनाने के इजरायल के विरोध और गाजा पर फिर से कब्जा करने के अंतरराष्ट्रीय विरोध से लड़ाई के बाद के समझौते मुश्किल हो रहे हैं। युद्ध के बाद गाजा के बड़े पैमाने पर पुनर्निर्माण के लिए अरब देशों की मदद के लिए दो-राष्ट्र समाधान की तरफ बढ़ने की जरूरत हो सकती है। लेकिन, इजरायल की मौजूदा सरकार ऐसे किसी भी समाधान के खिलाफ है, और इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू 1990 के दशक के मध्य से लगातार ऐसी किसी भी संभावना को कमजोर करने का काम कर रहे हैं। इजरायल की राजनीति धीरे-धीरे दाईं ओर खिसक गई है। उनका ये मानना है कि फिलिस्तीन के कुछ लोग इजरायल के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते और अतीत में समझौतों का विरोध कर चुके हैं। अक्टूबर में हुए बड़े हमले और उसकी तैयारी को देखते हुए, इजरायल की सुरक्षा को लेकर चिंतित लोगों की दलीलें और मजबूत हो जाएंगी।

भारत समेत अन्य जी20 देशों की भी परीक्षा :- दुनिया में अमेरिका की भूमिका कम होने की बातें हो रहीं हैं, वहीं दूसरी तरफ उसके वैश्विक दखल को लेकर बहस भी चल रही है। फिर भी, इस पूरे संकट को सुलझाने की कोशिश में अमेरिका ही एकमात्र बड़ी शक्ति है। वो इजरायल, अरब देशों, और बिचौलियों के जरिए ईरान और हमास से बातचीत कर रहा है। लेकिन, इसका प्रभाव सीमित ही नजर आता है। नेतन्याहू अमेरिका की सलाह नहीं मानते, ईरान सीधे इजरायल पर हमला करने से नहीं हटता और हमास बंधकों को रिहा करने के कई प्रस्तावों को स्वीकार नहीं करता। शायद अब समय आ गया है कि इस मामले को सुलझाने के लिए और बड़े प्रयास किए जाएं। चूंकि चीन, रूस और अमेरिका अब तक संयुक्त राष्ट्र में एक-दूसरे की कोशिशों को नाकामयाब करने में लगे हैं, तो जी-20 की मौजूदा अध्यक्षता कर रहे ब्राज़ील, भारत और दक्षिण अफ्रीका को यह देखना चाहिए कि क्या वे यूरोप और अरब देशों के कुछ और जी-20 देशों के साथ मिलकर कोई रास्ता निकाल सकते हैं। यह इस बात की अच्छी परीक्षा हो सकती है कि जी-20 वाकई में दुनिया का सबसे महत्व-पूर्ण संगठन है जैसा वो अक्सर दावा करता है।

लू को लेकर रेड अलर्ट जारी, पारा 45 के पार जाने का अनुमान

कोलकाता : बंगाल में इस समय भीषण गर्मी है। रविवार को भी इस तपिश से निजात मिलने की कोई उम्मीद नहीं है। अलीपुर मौसम विभाग ने दक्षिण बंगाल के जिलों के लिए लू को लेकर रेड अलर्ट जारी कर दिया है। अधिकांश जिलों में तापमान 40 डिग्री के पार पहुंच चुका है। मौसम विभाग की ओर से शनिवार दोपहर जारी चेतावनी के मुताबिक बुधवार तक कोलकाता समेत दक्षिण बंगाल के सभी जिलों में भीषण गर्मी जारी रहेगी। इसके अलावा छह जिलों में रेड अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग के मुताबिक, इन छह जिलों में बुधवार तक भीषण गर्मी जारी रहेगी, ये छह जिले हैं पूर्वी मेदिनीपुर, पश्चिम मेदिनीपुर, बांकुड़ा, झाड़ग्राम, बीरभूम और पश्चिम बर्द्धमान। इसके अलावा कोलकाता, हुगली, हावड़ा, दोनों 24 परगना, नदिया, मुर्शिदाबाद, पुरुलिया और पूर्वी बर्द्धमान के लिए भी गंभीर लू की चेतावनी जारी की गई है।

मौसम विभाग के मुताबिक आमतौर पर जब किसी क्षेत्र का तापमान सामान्य से साढ़े छह डिग्री सेल्सियस से अधिक होता है तो अति भीषण लू की स्थिति पैदा हो जाती है। अगर तापमान सामान्य से साढ़े चार डिग्री सेल्सियस अधिक हो तो इसे भीषण लू कहा जाता है। रविवार तक पूरे दक्षिण बंगाल में तापमान सामान्य से कम से कम साढ़े चार डिग्री ऊपर रहेगा। दक्षिण बंगाल में शुक्रवार को ही अधिकतम तापमान 44 डिग्री को पार कर गया था और शनिवार को भी वैसी ही स्थिति है। मौसम विभाग ने चेतावनी जारी की है कि अधिकतम पारा 44 पर भी नहीं थमेगा दक्षिण बंगाल में रविवार को अधिकतम तापमान 45 डिग्री से अधिक हो सकता है।

बंगाल के लोगों की परेशानी बढ़ाते हुए मौसम कार्यालय ने कहा कि आगामी सप्ताह बुधवार तक राज्य में लू की स्थिति में किसी बदलाव का कोई संकेत नहीं है। उन्होंने कहा है कि बुधवार तक के लिए पूरे दक्षिण बंगाल में लू की चेतावनी जारी की है। उत्तर व दक्षिण 24 परगना, कोलकाता, हावड़ा, हुगली और नदिया में लू की चेतावनी जारी की गई है, लेकिन शेष 9 जिलों में भीषण लू चलने की चेतावनी दी गई है।

जब फेल हुई खुफिया एजेंसी की रिपोर्ट इमरजेंसी में चुनाव कराने के खिलाफ क्यों थे संजय गांधी?

लोकसभा चुनाव 2024 पर विशेष

1977 में चुनाव कराने का फैसला लेते समय इंदिरा गांधी भले जीत के लिए कितनी भी आश्वस्त रही हों लेकिन उनके छोटे बेटे संजय गांधी इसके सख़्त खिलाफ थे. इस मसले पर मां-बेटे के बीच तकरार भी हुई थी. संजय तो इमरजेंसी में किसी भी प्रकार की ढील देने से भी सहमत नहीं थे और वे मानते थे कि लोगों की सोच बदलने तक अगले बीस-पच्चीस सालों तक इसे जारी रखा जा सकता है. खुफिया एजेंसियों और अन्य सरकारी तंत्र की रिपोर्ट ने इंदिरा गांधी को उनकी लोकप्रियता के चरम पर होने का भरोसा दिलाया था लेकिन चुनाव नतीजे इस रिपोर्ट के ठीक उलट थे. उत्तर भारत से कांग्रेस का लगभग सफाया हो गया था. खुद इंदिरा गांधी और संजय गांधी क्रमशः रायबरेली और अमेठी से चुनाव हार गए थे. जनता पार्टी को स्पष्ट बहुमत के साथ 298 और कांग्रेस को सिर्फ 153 सीटें हासिल हुई थीं. प्रख्यात पत्रकार कुलदीप नैयर उन लोगों में शामिल थे जिन्हें इंदिरा-संजय गांधी के कोप का शिकार होकर इमरजेंसी में कई महीने जेल में बिताने पड़े थे. चुनाव नतीजों के बाद नैयर एक दिन इंदिरा गांधी के घर 1,सफदरजंग पहुंचे थे. संजय गांधी का इंटरव्यू भी किया था. संजय की शर्त थी कि इसका उल्लेख किताब में न करूं. उनके जीवनकाल तक नैयर ने इसका पालन किया. तब के राजनीतिक हालात पर रोशनी डालता है कुलदीप नैयर की आत्मकथा में दर्ज यह प्रसंग-

बड़ी हार के बाद का सन्नाटा

उन दिनों कुलदीप नैयर इमरजेंसी पर अपनी किताब द जजमेंट लिख रहे थे. इंदिरा-संजय ने इमरजेंसी में उन्हें उन्हें जेल भेजा था. जाहिर है कि आपसी रिश्ते खराब थे लेकिन किताब के लिए उनसे मुलाकात और इंटरव्यू जरूरी था. इसमें कमलनाथ की मदद मिली. उन्होंने नैयर से खुद कहा कि संजय गांधी से मिले बिना वे इमरजेंसी के बारे में कैसे लिख सकते हैं? नैयर ने पूछा कि क्या संजय उनसे मिल सकते हैं? वे तो खुद ही उनका इंटरव्यू करने को आतुर हैं. चुनाव नतीजों के पहले तक भारी गहमागहमी और हलचल भरे इंदिरा गांधी के 1,सफदरजंग बंगले पर सन्नाटा पसरा हुआ था. किसी बड़ी लड़ाई में हार के बाद का माहौल था. कागज-फर्नीचर बिखरे हुए. कोई भी मुलाकाती नहीं था.

इंदिरा गांधी, लॉन में बिलकुल अकेली!

इंदिरा गांधी लॉन में अकेली खड़ी थीं. नैयर जिनसे वे पूर्व परिचित थीं, को देख वे पहले आगे बढ़ीं लेकिन फिर इरादा बदल भीतर चली गईं. एक पेड़ के नीचे खड़े संजय गांधी को उत्सुकता थी कि जनता पार्टी का संसदीय दल किसे अपना नेता चुनेगा? नैयर से मोरारजी का नाम जानने पर संजय को निराशा हुई थी. संजय को उम्मीद थी कि तब सरकार टिक सकती है. संजय गांधी की सोच थी कि अगर जगजीवन राम चुने जाएंगे तो किला जल्दी ही ढह जाएगा. जगजीवन राम के प्रति उनके मन में काफी नाराजगी थी. चुनाव के ठीक पहले पाला बदल कर जगजीवन राम ने कांग्रेस की हार में बड़ी भूमिका निभाई थी.

ऐसी होती सरकार जिसमें न होता कोई चुनाव

नैयर ने उनसे जानना चाहा था कि उन्हें कैसे भरोसा था कि इमरजेंसी की ज्यादतियों का खामियाजा नहीं भुगतना होगा? संजय का जवाब था कि उन्हें कोई चुनौती नहीं दिखाई दे रही थी. वे 20-25 या उससे भी ज्यादा सालों तक इमरजेंसी जारी रख सकते थे, जब तक ये भरोसा न हो जाए कि लोगों की सोच बदल गई है.

संजय का कहना था कि उनकी योजना के अनुसार कोई चुनाव नहीं होता. बंसीलाल जैसे सूबेदारों और वफादार नौकरशाहों के जरिए सरकार चलाई जाती. ये अलग किस्म की सरकार होती, जो पूरी तौर पर दिल्ली से नियंत्रित होती. कमलनाथ ने इमरजेंसी के दौरान नैयर को एक किताब की पांडुलिपि दी थी, जिसमें इसी सोच के शासन-तंत्र का विस्तार से वर्णन था.

संजय शुरू से ही चुनाव के खिलाफ़

तो फिर चुनाव क्यों कराए? जवाब में संजय गांधी ने इसे मां का फैसला बताते हुए उन्हीं से इस पर सवाल करने को कहा था. संयोग से इसी मौके पर इंदिरा गांधी एक बार फिर लॉन में दिखीं लेकिन फिर अंदर चली गईं थीं. संजय के मुताबिक, मैंने नहीं करवाए. मैं शुरू से ही इसके खिलाफ था. नैयर ने संविधान और मौलिक अधिकारों का हवाला देते हुए सवाल पूछा था कि ऐसी व्यवस्था कैसे चल सकती थी? संजय का उत्तर था, इमरजेंसी हटाई ही न जाती और सभी मौलिक अधिकार स्थगित रहते. संजय ने इन अफवाहों को खारिज किया था कि वे और उनकी मां सेना को सत्ता सौंपना चाहते थे.

सैन्य शासन की अफवाहों का सच !

नैयर के मुताबिक शायद संजय की बात सच हो लेकिन सेना के कुछ अधिकारियों की राय अलग थी. एयर मार्शल ओम मेहता ने नैयर को बताया था कि सेना के कुछ बड़े अधिकारियों में यह चर्चा जरूर हुई थी कि क्या उन्हें सत्ता हाथ में लेनी चाहिए ? लेकिन यह तय नहीं हो पाया कि कौन आगे आए और फिर टेक ओवर के बाद अज्ञात का भय भी सबके सामने था. कोई भी प्रजातांत्रिक ढांचा हमेशा के लिए तहस-नहस नहीं करना चाहता था.

एयर मार्शल इदरीस लतीफ़ को थलसेना पर पूरा भरोसा नहीं था, क्योंकि वह कभी भी वायुसेना और नौसेना को विश्वास में नहीं लेते थे. रिटायरमेंट के बाद लतीफ़ ने तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई और बाद में मनमोहन सिंह को लिखा था कि सेना के नजरिए से देश को एरिया और सब एरिया में न बांटा जाए. सेना प्रमुख का भी पद न बनाया जाए, क्योंकि उसके तानाशाह बनने का खतरा रहेगा. दोनों ही प्रधानमंत्रियों ने लतीफ़ के पत्र का जवाब नहीं दिया था.

भीषण गर्मी के चलते स्कूलों में गर्मी की छुट्टियां समय से पहले घोषित की

कोलकाता : बंगाल सरकार ने राज्य में भीषण गर्मी की स्थिति को देखते हुए सरकारी एवं सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में समय से पहले यानी 22 अप्रैल से ही गर्मी की छुट्टियों (ग्रीष्मावकाश) की गुरुवार को घोषणा की। स्कूल शिक्षा विभाग की ओर से जारी की गई अधिसूचना में कहा गया है कि इस दौरान विद्यार्थियों के अलावा अध्यापक एवं गैर शिक्षक कर्मियों की भी छुट्टी रहेगी लेकिन लोकसभा चुनाव के मद्देनजर संबंधित निर्वाचन अधिकारियों का निर्देश भी उन पर लागू होगा। गौरतलब है कि इससे पहले राज्य सरकार ने छह मई से गर्मी की छुट्टी की घोषणा की थी। राज्य के कई जिलों में तापमान 40 डिग्री से भी अधिक पहुंच गया है, इसको देखते हुए राज्य सरकार ने 22 अप्रैल से ही छुट्टी देने का फैसला किया है। स्कूली शिक्षा सचिव द्वारा प्राथमिक शिक्षा एवं माध्यमिक बोर्डों के अध्यक्षों के लिए जारी किए गए नोटिस में कहा गया है, तेज गर्मी की वर्तमान स्थिति पर विचार करते हुए प्रशासन ने आपके प्रशासनिक अधिकार क्षेत्र में आने वाले विद्यालयों में ग्रीष्मावकाश निर्धारित समय से पहले ही 22 अप्रैल से करने का निर्णय लिया है। हालांकि पर्वतीय दार्जिलिंग और कलिम्पोंग जिलों के विद्यालय इसके अपवाद होंगे और वहां वर्तमान अकादमिक कार्यक्रम अगले आदेश तक जारी रखने को कहा गया है। राज्य में फिलहाल लोकसभा चुनाव का दौर है तथा शुरुआती चरणों में उत्तर बंगाल में होने वाले मतदान के कारण वहां के कई विद्यालयों को सुरक्षाबलों के शिविरों एवं मतदान केंद्रों में तब्दील कर दिया है, ऐसे में पहले ग्रीष्मावकाश छह मई से निर्धारित किया गया था। शिक्षा मंत्री ब्रत्य बसु ने कहा कि निजी विद्यालयों से भी विद्यार्थियों के हित में ग्रीष्मावकाश पहले कर लेने का अनुरोध किया जा रहा है।

कुटुम्ब की अहमियत समझते हैं भारतीय, तभी तो भारत में सबसे कम होते हैं तलाक; बाकी देशों का बुरा है हाल

नई दिल्ली : परिवार और परिवार के मूल्यों की जब कभी भी बात होगी तो हिंदुस्तान हमेशा टॉप पर ही रहेगा और यह बात सिद्ध भी हो चुकी है। हाल ही में सामने आई एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में सबसे कम तलाक के मामले होते हैं। यह रिपोर्ट वर्ल्ड ऑफ स्टैटिक्स ने जारी की है।

रिपोर्ट में भारत, अमेरिका समेत तमाम मुल्कों का जिक्र है। ऐसे में आज हम 'वसुधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा के साथ परिवार का महत्व समझेंगे और यह जानेंगे कि भारत में ही आखिर तलाक के मामले इतने कम क्यों हो हैं।

'वसुधैव कुटुम्बकम', विश्व एक परिवार है... भारत प्रमुखता के साथ इस बात को स्वीकारता है और इसकी प्रमाणिकता उस वक्त और भी ज्यादा बढ़ जाती है, जब हम देखते हैं कि दूसरे मुल्क जब विपत्ति में होते हैं और हिंदुस्तान की तरफ देखते हैं तो उन्हें कभी भी निराशा का सामना नहीं करना पड़ता है, लेकिन क्या आप लोगों ने कभी सोचा है कि वसुधैव कुटुम्बकम की ताकत हमें कहां से मिलती है।

परिवार और संस्कृति से मिलती है ताकत- वसुधैव कुटुम्बकम की ताकत हमें हमारे परिवार और संस्कृति से मिलती है। जन्म के समय से ही बड़े बुजुर्ग संस्कारों की बात करने लगते हैं। अदब सिखाया जाता है, धार्मिक महत्वता से रूबरू कराया जाता है, ताकि कुटुम्ब की परिभाषा को चरितार्थ किया जा सके। कुटुम्ब यानी परिवार जिसका साफ सीधा मतलब है कि मिल जुलकर स्नेह के साथ रहना और विपत्ति के समय चट्टान की तरह मजबूती के साथ खड़े रहना। परिवार में न सिर्फ आत्ममुग्धता की बात नहीं होती, बल्कि अपनों की बात होती है। खुद से बढ़कर दूसरों की बात होती है। मैं से ज्यादा हम का महत्व होता है।

तभी तो पारिवारिक ताना बाना मजबूत होता है और रही बात शादी-ब्याह और तलाक की तो सबसे पहले हम आप लोगों को आंकड़ें बता देते हैं।

कहां होते हैं सबसे कम तलाक ?

भारत में सबसे कम तलाक होते हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में तलाक रेट महज एक फीसदी है, जबकि वियतनाम में 7 फीसदी, तजाकिस्तान में 10 फीसदी, ईरान में 14 फीसदी, मैक्सिको, मिस्र और साउथ अफ्रीका में 17-17 फीसदी, ब्राजील में 21 फीसदी, तुक्रिये में 25 फीसदी है।

रिपोर्ट के मुताबिक, एशियाई देशों में तलाक के मामले सबसे कम हैं, जबकि यूरोप और अमेरिका का हाल बेहाल है, यहां पर सबसे ज्यादा परिवार टूटते हैं और इसके पीछे का कारण तो आप सभी लोग समझते ही हैं। यूं तो बालिग होते ही आत्मनिर्भरता की बात करने वाले लोग अपने परिवारों से दूर हो जाते हैं, जबकि भारत के भी युवा आत्मनिर्भरता की बात करते हैं, लेकिन अपने परिवारों और संस्कृति से दूर नहीं होते हैं। हालांकि, अपवाद हर जगह पर मौजूद है।

सबसे ज्यादा डिवोर्स रेट ?

रिपोर्ट के मुताबिक, पुर्तगाल में सबसे ज्यादा डिवोर्स रेट है, वहां पर तलाक के 94 फीसदी मामले हैं। जबकि स्पेन में 85 फीसदी, लक्समबर्ग में 79 फीसदी, रूस में 73 फीसदी, यूक्रेन में 70 फीसदी, क्यूबा में 55 फीसदी, फिनलैंड में 55 फीसदी, बेल्जियम ने 53 फीसदी, फ्रांस में 51 फीसदी और अमेरिका में 43 फीसदी है।

भारत में शादी का महत्व ?

भारत और भारत के लोग परिवारों और संस्कारों को महत्व देते हैं। यहां पर शादी का मतलब महज दो लोगों को विवाह नहीं होता है, बल्कि आत्माओं, परिवारों और संस्कारों का मिलन होता है। यहां पर दो परिवारों की शादी होती है, जो सुख-दुख में एक-दूसरे के साथ खड़े रहते हैं। ऐसा नहीं है कि रिश्तों में खटास देखने को नहीं मिलती है, लेकिन आपसी बुद्धिमता के साथ विवादों को सुलझाया जाता है। हालांकि, कई बार मामले बिगड़ भी जाते हैं।

टीएमसी ने बंगाल को अवैध घुसपैठियों व अपराधियों को लीज पर दे दिया है : मोदी

बालुरघाट : भाजपा के दिग्गज नेता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पश्चिम बंगाल राज्य की सत्तारूढ़ पार्टी तृणमूल कांग्रेस पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा है कि, 'तृणमूल कांग्रेस ने एक तरह से बंगाल को अवैध घुसपैठियों और अपराधियों को लीज पर दे दिया है। इसलिए, बंगाल सरकार घुसपैठियों को संरक्षण देती है और कानूनी शरणार्थियों को नागरिकता देने वाले सीएए कानून का विरोध करती है। आपको इनकी अफवाहों में नहीं आना है। ये अपने भ्रष्टाचार और अपराधों को छुपाने के लिए झूठ का सहारा ले रहे हैं। तृणमूल कांग्रेस को इनके पापों की सजा कमल का बटन दबा कर देनी है।'वह दक्षिण दिनाजपुर जिला के बालुरघाट लोकसभा क्षेत्र के भाजपा उम्मीदवार सुकांत मजूमदार के समर्थन में बालुरघाट में एक विशाल चुनावी जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने आगे कहा कि, 'बंगाल की तृणमूल कांग्रेस सरकार तोलाबाजों (रंगदारों), अपराधियों ओर भ्रष्टाचारियों का अड्डा बन गई है। भाजपा कार्यकर्ताओं की यहां आए दिन हत्याएं होती हैं। बालुरघाट में कुछ वकत पहले हमारे बूथ सभापति की हत्या की गई। संदेशखाली में महिलाओं पर जो जुल्म हुए, शोषण की जो घटनाएं सामने आईं उनसे पूरा देश दहल गया है। देश ने ये भी देखा कि तृणमूल कांग्रेस सरकार किस तरह संदेशखाली के अपराधी के आखिर तक बचाने में लगी रही। तृणमूल कांग्रेस बंगागल में भ्रष्टाचार का खुला खेल खेल रही है। सरकारी ठेके तृणमूल कांग्रेस के गुंडों के बिजनस बन गए हैं।यहां तक कि प्राथमि शिक्षकों की बहाली में भी घोटाले हो रहे हैं। सरकार में मंत्रियों के ठिकाने पर रेड होती है तो करोड़ों रुपये कैश बरामद होते हैं। एजेंसियां जब भ्रष्टाचारियों पर कार्रवाई के लिए जाती है तो उन पर हमले करवाए जाते हैं।

वहीं, पीएम मोदी ने जूट किसानों, आदिवासियों व अन्य समुदायों की समस्याओं को रेखांकित करते हुए उनके समाधान का भी आश्वासन दिया। इसके साथ ही केंद्र सरकार द्वारा बंगाल में किए गए कई विकास कार्य गिनवाए एवं आगे और भी विकास करने का वादा किया। इसी दिन शाम में पीएम मोदी ने उत्तर दिनाजपुर जिले के रायगंज लोकसभा क्षेत्र के भाजपा उम्मीदवार कार्तिक पाल के समर्थन में भी चुनावी जनसभा की। उन्होंने यह भी कहा कि, 'तृणमूल कांग्रेस को लगता है कि, अगर लोगों को मोदी की गारंटी से लाभ मिला तो राज्य की जनता का विकास हो जाएगा। इससे तृणमूल कांग्रेस की दुकान बंद हो जाएगी। इसलिए वह झूठी खबरें फैला रही है। आज पूरा राज्य कह रहा है, चार जून को 400 पार और फिर एक बार मोदी सरकार।'

प्रचार के दौरान गो बैक नारा सुन अधीर ने खोया आपा, थप्पड़ जड़ने का आरोप

कांग्रेस सांसद व प्रत्याशी अधीर चौधरी ने तमाचा मारने से किया इन्कार, नारे लगाने वाले को बताया नशेड़ी

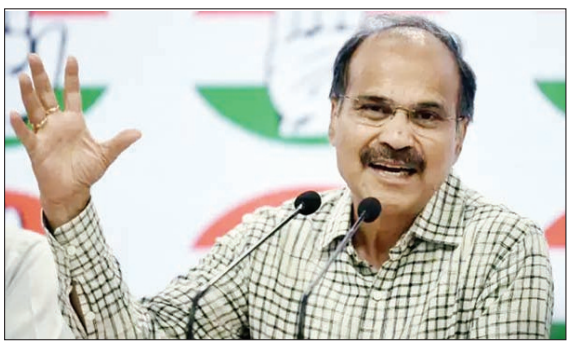

कोलकाता : पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम के तहत बहेद ही प्रसन्न मुद्रा में चुनाव प्रचार के लिए मुर्शिदाबाद जिले के बहरमपुर लोकसभा क्षेत्र के कांग्रेस उम्मीदवार व मौजूद सांसद अधीर चौधरी घर से निकले थे। लेकिन अचानक उन्होंने अपना आपा खो दिया। बहरमपुर नगर पालिका इलाके के गांधी कालोनी से बीटी कालेज चौराहे तक जनसंपर्क के दौरान पांच बार के सांसद के खिलाफ 'गो बैक' के नारे लगने लगे। फिर क्या था कांग्रेस उम्मीदवार अधीर चौधरी गुस्सा हो गए और आरोप है कि उन्होंने नारे लगाने वाले एक व्यक्ति को थप्पड़ मार दिया। हालांकि, उन्होंने आरोपों से इन्कार किया। इसके अलावा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने खास अंदाज में कहा कि तृणमूल के उपद्रवी मुझे परेशान कर रहे थे। मैंने विरोध किया है।

जनसंपर्क के दौरान स्थानीय तृणमूल कार्यकर्ता अधीर की गाड़ी को घेर कर 'गो बैक' के नारे लगाने लगे। विरोध के कारण बहरमपुर के कांग्रेस प्रत्याशी की गाड़ी फंस गई। अधीर गाड़ी से उतरे तो वहां तृणमूल कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ कहासुनी शुरू हो गई। कथित तौर पर उस वक्त उन्होंने एक तृणमूल कार्यकर्ता को धमकी दी थी। उसे धक्का दिया और थप्पड़ भी मारा। उधर, विवाद की सूचना मिलने पर कुछ ही देर में पुलिस भी पहुंच गई। उन्होंने गुस्साई भीड़ को तितर-बितर किया और कांग्रेस प्रत्याशी को निकाल ले गए। इस घटना में पुलिस दो लोगों को गिरफ्तार कर चुकी है। तृणमूल की शिकायत है कि अधीर अपना जनाधार के साथ आपा भी खो रहे हैं। सत्ता पक्ष ने मांग की है कि उन्हें माफी मांगनी चाहिए। प्रदर्शनकारियों के बीच विकास सामंत नाम के एक तृणमूल कार्यकर्ता ने दावा किया कि अधीर चौधरी गाड़ी से उतरे और एक व्यक्ति पर हाथ उठाया। उन्हें किसी व्यक्ति पर हाथ उठाने का कोई अधिकार नहीं है। उन्हें अपनी गलती स्वीकार करनी होगी।

दूसरी ओर, कांग्रेस उम्मीदवार ने आरोप लगाया कि तृणमूल उनके अभियान में बाधा डालने की योजना बना रखी है। उन्होंने प्रदर्शनकारियों पर 'चुल्लुखोर' यानी नशेड़ी कहकर कटाक्ष किया। उन्होंने मौके पर खड़े होकर जिला पुलिस अधीक्षक को फोन किया। साथ ही उन्होंने कहा कि वह इस मामले को चुनाव आयोग के ध्यान में लाएंगे। साथ ही अधीर ने यह भी कहा कि तृणमूल समर्थकों को मेरा अभियान क्यों रोकना चाहिए? नशे में वह कहेगा 'गो बैक', मैंने विरोध किया। हर तरफ सीसीटीवी हैं, आपको सबूत मिल जाएगा कि किसी को मैंने छुआ है या नहीं। बहरमपुर नगर पालिका के चेयरमैन नाड़ूगोपाल मुखोपाध्याय ने इस विवाद पर कहा कि गांधी कालोनी जैसी जगहों पर, जहां लोग कभी अधीर चौधरी को 'मसीहा' मानते थे, आज उन्हें विरोध का सामना करना पड़ रहा है. तो अधीर चौधरी का जनाधार न सिर्फ निचले पायदान पर है, बल्कि जमीन में समा चुका है.

बंगाल के शिक्षक भर्ती घोटाले में आरोपितों की संख्या सौ से ज्यादा

कोलकाता : स्कूल सेवा आयोग (एसएससी) की कक्षा 9-10, 11-12 के शिक्षकों की भर्ती में कथित अनियमितता के मामले में ईडी ने गुरुवार को केंद्रीय एजेंसी की विशेष अदालत में पहला आरोपपत्र दाखिल किया। 300 पन्ने की मूल चार्जशीट में आरोपितों की संख्या 100 से ज्यादा है। आरोपितों की सूची में एसएससी के पूर्व सलाहकार शांतिप्रसाद सिन्हा, बिचौलिए प्रसन्न राय समेत अन्य लोग और 90 से अधिक संगठनों के नाम शामिल हैं।

ईडी को लगता है कि इस मामले में 11वीं-12वीं के अयोग्य अभ्यर्थियों की संख्या करीब 1120 है। नौवीं-दसवीं में ये संख्या 946 के करीब है। ईडी ने आरोपपत्र में यह भी दावा किया है कि इस मामले में कई एजेंट और बिचौलिए शामिल हैं। केंद्रीय जांच एजेंसी ने मूल आरोपपत्र के अलावा 17,000 से अधिक पन्नों के दस्तावेज भी अदालत को सौंपे हैं। गौरतलब है कि एसएससी सलाहकार समिति के पूर्व प्रमुख शांतिप्रसाद को नौवीं-दसवीं शिक्षक भर्ती में भ्रष्टाचार के आरोप में 10 अगस्त 2022 को सीबीआइ ने गिरफ्तार किया था। इससे पहले उसे उसी साल तीन अप्रैल को भर्ती भ्रष्टाचार मामले में ईडी ने गिरफ्तार किया था। शांतिप्रसाद पर एसएससी भर्ती भ्रष्टाचार में फर्जी नियुक्ति पत्र देने का आरोप है। कथित तौर पर मुख्य रूप से उसके कार्यकाल के दौरान भर्ती भ्रष्टाचार हुआ था। दूसरी ओर दो भर्ती भ्रष्टाचार मामलों ग्रुप डी भर्ती मामला और 9वीं-10वीं शिक्षक भर्ती मामले की जांच के दौरान सीबीआइ को प्रसन्न राय नाम मिला। बाद में प्रसन्न को सीबीआइ ने गिरफ्तार कर लिया।

भारत-बांग्लादेश सीमा से हटाकर बीएसएफ की आधी से ज्यादा कंपनियां चुनावी ड्यूटी पर, सुरक्षा पर सवाल

चिंताजनक

- पूर्वी कमान की 602 में से 395 कंपनियां भेजी गई हैं चुनावी ड्यूटी पर
- अंतरराष्ट्रीय सीमा की सुरक्षा हो रही है प्रभावित

कोलकाता : बंगाल समेत पूर्वोत्तर राज्यों से बांग्लादेश के साथ लगने वाली 4,096 किलोमीटर लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा सुरक्षा की दृष्टि से बेहद संवेदनशील है, जिसके जरिए घुसपैठ व तस्करी एक बड़ी समस्या रही है। इन सीमा के बड़े इलाकों में अब तक ताड़बंदी भी नहीं है, ऐसे में इसकी सुरक्षा और चुनौतीपूर्ण हो जाती है। इन सबके बीच हर बार विभिन्न राज्यों में विधानसभा और देश में लोकसभा चुनाव के समय इस सीमा से बड़ी संख्या में सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के जवानों को हटाकर चुनावी ड्यूटी में भेज दिया जाता है, जिससे अंतरराष्ट्रीय सीमा की सुरक्षा प्रभावित हो रही है। इस बार लोकसभा चुनाव की बात करें तो बीएसएफ के पूर्वी कमान के अधीन इस सीमा पर तैनात 602 कंपनियों में से 395 कंपनियों यानी आधे से भी ज्यादा जवानों को बार्डर से हटाकर चुनावी ड्यूटी के लिए भेजा जा चुका है। कोलकाता में बीएसएफ के पूर्वी कमान मुख्यालय के एक उच्च पदस्थ सूत्र ने बताया कि केंद्र सरकार के निर्देश पर उनकी 60 से 65 प्रतिशत कंपनियां इस समय चुनावी ड्यूटी पर हैं, जिन्हें करीब डेढ़ माह पहले ही भेजा जा चुका है। बीएसएफ की एक कंपनी में अधिकारियों समेत जवानों की कुल संख्या करीब 100 होती है। चुनाव के लिए पूर्वी कमान से इतनी बड़ी संख्या में बीएसएफ कंपनियों के जाने का सीधा असर सीमा प्रबंधन पर पड़ रहा है। लिहाजा सीमा पर कम नफरी की वजह से बंगाल, असम, मेघालय व अन्य सीमावर्ती राज्यों में भारत-बांग्लादेश सीमा पर नशीले पदार्थों, सोने व अन्य प्रतिबंधित सामानों की तस्करी व अन्य आपराधिक घटनाएं काफी बढ़ गई है। ये सभी कंपनियां अब चुनाव संपन्न होने के बाद ही लौटेगी। सूत्र ने बताया कि 395 में से सबसे ज्यादा दक्षिण बंगाल फ्रंटियर, कोलकाता की 90 कंपनियां जबकि उत्तर बंगाल फ्रंटियर, सिलीगुड़ी की 70 कंपनियां शामिल हैं, जो चुनावी ड्यूटी पर है।

मौके का फायदा उठाने की ताक में रहते हैं राष्ट्र विरोधी तत्व :- नाम नहीं छापने की शर्त पर एक वरिष्ठ बीएसएफ अधिकारी ने बताया कि जब भी देश में कहीं चुनाव होता है और जवानों को बार्डर से हटाकर चुनावी ड्यूटी में भेजा जाता है तो देखा जाता है कि उस समय सीमा पर प्रहरियों की कम तैनाती की वजह से तस्करी, घुसपैठ सहित सभी प्रकार की गैरकानूनी गतिविधियां बढ़ जाती है। उनके मुताबिक, अपराधों में शामिल लोग व राष्ट्र विरोधी तत्व इस मौके का फायदा उठाने की ताक में रहते हैं। लिहाजा इससे राष्ट्र की सुरक्षा प्रभावित होती है। अभी हर दिन तस्करी व घुसपैठ की लगातार कोशिशें हो रही है।

जवानों पर बढ़ जाता है दबाव :- अधिकारी ने बताया कि एक कंपनी आठ से 10 किलोमीटर का इलाका कवर करती है। वहीं, चुनाव के समय कम जवानों की स्थिति में एक कंपनी को 15 से 20 किलोमीटर का इलाका कवर करना पड़ता है। ऐसे में सीमा की सुरक्षा में तैनात जवानों पर अतिरिक्त दबाव बढ़ जाता है और उन्हें सुरक्षा में काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। बता दें कि पूर्वी कमान पर ही भारत- बांग्लादेश की 4,096 किलोमीटर लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा की सुरक्षा का जिम्मा है। इसमें 2,200 किलोमीटर सीमा बंगाल में ही लगती है। यह बार्डर इलाका सुरक्षा के लिहाज से बेहद संवेदनशील है और बड़े इलाकों में अब तक सीमा पर फेंसिंग तक नहीं है। इन इलाकों से आतंकियों की भी गिरफ्तारियां होती रही है।

उच्च स्तर पर जताई जा चुकी है चिंता :- बीएसएफ अधिकारियों की मानें तो हर बार चुनाव के समय बड़ी संख्या में कंपनियों के जाने से प्रभावित होने वाली सुरक्षा के बारे में पूर्व में कई बार बल में उच्च स्तर पर एवं सरकार के समक्ष चिंताएं जताई जा चुकी हैं। लेकिन इसके बावजूद देखा जाता है कि हर बार इस संवेदनशील बार्डर से चुनावी के लिए बड़ी संख्या में कंपनियों को भेज दिया जाता है।

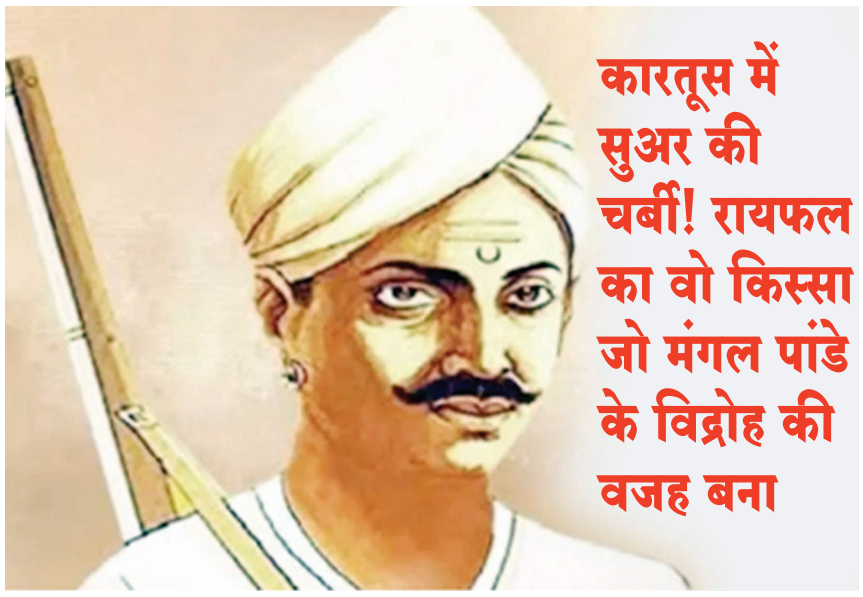

कारतूस में सुअर की चर्बी! रायफल का वो किस्सा जो मंगल पांडे के विद्रोह की वजह बना

मंगल पांडे के बगावत की कारण था अंग्रेजों की सेना में इनफील्ड पी-53 रायफल में इस्तेमाल किए जाने वाले कारतूस. साल 1856 में अंग्रेजों ने भारतीय सैनिकों को एक नई बंदूक दी थी, जिसमें कारतूस लोड करने से पहले उसे दांत से काटना पड़ता था.

यह 19वीं सदी के मध्य की बात है. कलकत्ता से करीब 16 मील दूर बैरकपुर की सैनिक छावनी में अचानक विद्रोह की चिंगारी ज्वाला बन गई. अफवाह फैल गई थी कि सैनिकों को दिए जाने वाली कारतूस में सुअर की चर्बी थी, जिसे उन्हें अपने दांत से खींचना पड़ता था. फिर क्या था 29 मार्च 1857 को रविवार की छुट्टी की दोपहर अचानक मंगल पांडे नामक सैनिक ने रेजिमेंट का कोट और धोती पहनकर अंग्रेजों को चुनौती दे दी. पूर्वी भारत में सबसे अधिक भारतीय सैनिकों वाली इस छावनी में अंग्रेज गवर्नर जनरल का निवास होने के बावजूद यह विद्रोह की गवाह बन गई. इस घटना की वर्षगांठ पर आइए जान लेते हैं पूरा किस्सा.

जाने-माने इतिहासकार रुद्रांशु मुखर्जी की एक किताब है, डेटलाइन 1857 रिवोल्ट अगेंस्ट द राज. इसमें उन्होंने विद्रोह के बारे में विस्तार से लिखा है. वह लिखते हैं कि 29 मार्च की दोपहर में रेजिमेंट का कोट और धोती पहने मंगल पांडे नंगे पैर एक भरी हुई बंदूक लेकर छावनी में पहुंचे और सैनिकों से चिल्लाकर कहा कि फिरंगी यहां पर हैं. आखिर तुम सब तैयार क्यों नहीं हो रहे हो? ये कारतूस काटने से हमारा धर्म भ्रष्ट हो जाएगा. धर्म के लिए उठ खड़े हो.

नई राइफल के कारतूस को लेकर फैली थी अफवाह

दरअसल, मंगल पांडे के इस बगावत की कारण था अंग्रेजों की सेना में इनफील्ड पी- 53 रायफल में इस्तेमाल किए जाने वाले कारतूस. साल 1856 में अंग्रेजों ने भारतीय सैनिकों को एक नई बंदूक दी थी, जिसमें कारतूस लोड करने से पहले उसे दांत से काटना पड़ता था.

उसी दौर में भारतीय सैनिकों के बीच यह अफवाह फैल गई थी कि नई राइफल के कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी का इस्तेमाल किया गया है. इससे उनकी धार्मिक भावना आहत होती. इसको लेकर अंग्रेजी सेना में शामिल भारतीय सैनिक एकमत थे कि उनको नीचा दिखाने के लिए ऐसा किया जा रहा है.

ऐसे में दो फरवरी 1857 की शाम को बैरकपुर छावनी में परेड के दौरान भारतीय सिपाहियों ने नई राइफल के कारतूस इस्तेमाल करने को लेकर असहमति जाहिर करनी शुरू कर दी. अंग्रेजों के चाटुकार सिपाहियों ने इसकी जानकारी अंग्रेजों को दे दी और यह भी कहा कि भारतीय सैनिक रात में अंग्रेज अफसरों को मारने का प्लान बना रहे हैं.

अंग्रेजों के पिट्ठू ने मंगल पांडे को पकड़ लिया

वहीं, अंदर ही अंदर सुलग रही कारतूस की चिंगारी 29 मार्च को अचानक ज्वाला बन गई. साल 1849 में 22 साल की उम्र में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में शामिल हुए मंगल पांडे ने कारतूस के इस्तेमाल के खिलाफ हंगामा शुरू कर दिया, तो परेड ग्राउंड पर अंग्रेज लेफ्टिनेंट बीएच बो पहुंच गया. मंगल पांडे ने तुरंत उस पर फायर कर दिया जो उसके घोड़े के पैर पर लगी. इससे घोड़ा गिर गया. तभी बो के पीछे सार्जेंट मेजर हिउसन भी आ गया. बो और हिउसन ने तलवार निकालकर तलवारें निकाल लीं तो मंगल पांडे ने उन पर अपनी तलवार से हमला कर दिया. दूसरे भारतीय सैनिक तो खड़े रहे पर शेख पलटू नामक चाटुकार ने मंगल पांडे को पीछे से पकड़ लिया. इससे दोनों अंग्रेज अफसर बच गए.

मंगल पांडे ने खुद को मार ली थी गोली

हंगामा चल ही रहा था कि कर्नल एसजी वेलर पहुंच गए और दूसरे सैनिकों से मंगल पांडे को पकड़ने के लिए कहा तो उन्होंने मना कर दिया. इसी बीच मौके पर पहुंचे मेजर जनरल हियरसे पहुंच गया और क्वार्टर गार्ड पर पिस्टल लहराकर सैनिकों को आदेश दे दिया कि अगर किसी सैनिक ने मार्च नहीं किया तो उसे गोली मार देगा. इस पर सब सैनिक मंगल पांडे की तरफ बढ़ने लगे तो उन्होंने बंदूक की नाल अपने सीने की तरफ की और पैर की अंगुली से बंदूक का ट्रिगर दबा दिया. इससे चली गोली मंगल पांडे के कंधे, सीने और गर्दन को चीरते हुए निकल गई. वह गिर गए और गिरफ्तार कर अस्पताल भेज दिए गए.

बिना कोई सवाल पूछे फांसी पर लटका दिए गए

इस विद्रोह के कारण मंगल पांडे से बिना कोई पूछताछ किए उनको फांसी की सजा सुना दी गई. इसके लिए 18 अप्रैल 1857 की तारीख तय की गई थी पर अंग्रेजों को डर था कि विद्रोह दूसरे इलाकों में भी फैल सकता है, इसलिए 10 दिन पहले आठ अप्रैल को ही दूसरे सैनिकों के सामने उन्हें फांसी पर लटका किया गया.

नजरिया बदलने से टलेगा गुस्सा

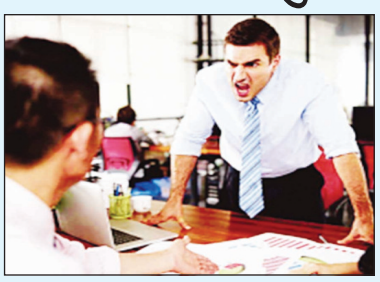

माना कि गुस्से पर काबू करना मुश्किल है, लेकिन नामुमकिन तो नहीं है। बेशक यह प्राकृतिक भावना है। घर हो या बाहर, आप तो कोई बात पसंद नहीं आई, तो बिना सोचे-समझे सामने वाले को कुछ भी बोल देते हैं। जब बात ठंडी होती है, तब अपने पर गुस्सा आता है कि ऐसा-वैसा क्यों बोला? बात यहीं खत्म नहीं होती। मसलन, मन अशांत रहता है, काम में मन नहीं लगता, रात्रि में नींद नहीं आती, मन हमेशा निगेटिव सोचता है, तनाव बना रहता है और गुस्से से चेहरे के हाव-भाव बिगड़ते हैं। धीरे-धीरे उसका प्रभाव हमारी सेहत व चेहरे पर दिखाई देने लगता है।

क्यों आता है गुस्सा?- गुस्सा आने के भी कई कारण हैं। कुछ लोग स्वभाव से क्रोधी होते हैं। कई लोगों की नजर में छवि गुस्सैल की बन जाती है। सोचते बाद में हैं, पहले रिएक्ट करते हैं, कुछ परिस्थितियों के सामने अपने मन मुताबिक कुछ नहीं कर पाते तो उन्हें क्रोध आता है। कुछ लोग दूसरों को आगे बढ़ता देख मन ही मन ईर्ष्या करते हैं और स्वभाव क्रोधी हो जाता है। कई बार दूसरे लोग आपको इतना इरिटेट करते हैं जिससे आप अपना आपा खो बैठते हैं। कुछ लोग गुस्से को दबाए रखते हैं और अचानक आप गुस्सा दूसरे परनिकाल देते हैं। कभी-कभी आप मेहनत करते हैं, उसका लाभ दूसरे उठा लेते हैं, तब भी आप को गुस्सा आता है। कई बार आप अपनी बात ठीक तरीके से सामने नहीं रख पाते और दूसरा आपको गलत समझता है, तब भी गुस्सा आता है। परिवार में उचित मान-सम्मान न मिलने के कारण, उम्मीद पूरी न होने पर, अधिक काम करने पर और शारीरिक मजबूरियां होने पर भी गुस्सा आ सकता है।

शहर की जीवनशैली से कड़वाहट- महानगरों में सड़कों पर जाम का लगना और आपका सुबह-शाम सड़कों पर होना रोजमर्रा का जीवन है। हाल ही में कई शोध पत्र आया है, जिसमें कहा गया है कि जाम बड़े महानगरों में तनाव और बढ़ती चिंता का कारण बन सकता है। जब हम लगातार प्रदूषण वाले तत्वों, शोर और दूषित हवा के संपर्क में रहते हैं तो शरीर में तनाव हार्मोन बढ़ने लगते हैं। इसके साथ ही यह भी कहा गया है कि प्रदूषण में रहने और बाहर निकलने पर बारीक पार्टिकल्स खासकर पीएम 2.5 कण न्यूरोजेनेरेटिव डिसऑर्डर यानि भ्रम की स्थिति और अल्जाइमर जैसी बीमारियों का शिकार बनाने का खतरा पैदा करते हैं। इसके अलावा मेट्रो सिटीज में बढ़ते ध्वनि प्रदूषण से नींद पर भी असर पड़ रहा है। इन महानगरों में रहने वाले लोगों का स्लीप पैटर्न खराब हो रहा है। नतीजा, आपको कई बार जरा सी बात पर भयंकर गुस्सा आता है।

जब आए गुस्सा तो बदलें खुद को- आप दूसरों को अपने अनुरूप ढाल नहीं सकते, लेकिन खुद को बदल सकते हैं। जीवनशैली और सोच का पैटर्न बदलकर यह संभव है। अगली बार जब गुस्सा आए, तो इसे अपने पर हावी नहीं होने दें। प्रयास शुरू कर दें कि आप अपनी ऊर्जा को पॉजिटिव खर्च करें जैसे खेलकर, व्यायाम करके और अपनी रुचियों को आगे बढ़ाकर। रोज सुबह 10 मिनट तक ब्रीदिंग व्यायाम भी करें। इससे नकारात्मक सोच बाहर निकलती है और सकारात्मक सोच अंदर जाती है। गुस्सा क्यों आया है? इस पर अपने मन की बातों को डायरी में लिखें। ऐसा करने से आपको अहसास होगा कि मैं इसमें कहां स्टैंड करता हूं, गुस्सा कितनी देर में आता है, कितनी बार आता है और धीरे-धीरे गुस्सा कम होता जाएगा।

गुरुवार को जन्म लेने वाली बेटियां पर होती है लक्ष्मीनारायण की कृपा

ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक जीवन में जन्म तिथि व ग्रहों की दशा का विशेष महत्व होता है। हर दिन का अपना एक अलग महत्व है। गुरुवार के दिन जन्म लेने वाले जातकों को भगवान विष्णु एवं मां लक्ष्मी की विशेष कृपा मिलती है। बेटियों के लिए यह दिन और भी खास होता है। जीवन में विशेष सम्मान प्राप्त करती है। इन्हें मीठा खाना बहुत पसंद होता है। चाकलेट सबसे ज्यादा पसंद करती है। ज्योतिषाचार्य पंडित देव कुमार पाठक के अनुसार इस दिन पैदा हुई बेटियां धार्मिक प्रवृति की होती है। विष्णु भगवान के अवतारों के पूजक होते है। अत्यधिक ज्ञानवान होते है। घर परिवार से लेकर अपने जीवन में मान-सम्मान हासिल करती है। इनकी दयालु प्रवृति होती है तथा ये विश्वसनीय होते हैं।

ये सर्वप्रथम अपना तथा अपने परिवार का ध्यान देते है। अक्सर देखा गया है कि नशा या अन्य व्यसन को लेकर दूर रहती है। इनका शरीर अत्यंत सुंदर होता है। इनके जीवन मे अनेक विषम स्थितियां भी देखने को मिलती है परंतु सकारात्मक सोच व संतुष्ट होने के कारण ये दूसरों की तरह बिलखते नहीं बल्कि शांति पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

स्कूली शिक्षा हो या उच्च शिक्षा। इनका झुकाव हमेशा अध्ययन की ओर होता है। अच्छे मार्गदर्शक और मित्रों के प्रिय होते हैं। समाज व देश के प्रति समर्पित रहते हैं। कंजूस जैसे भले ही व्यवहार करते हैं लेकिन होते नहीं है। दिल के बड़े साफ होते है। मित्रों के लिए जान न्यौछावर करने वालों में होती है। चंचल स्वभाव की होने के कारण कई बार ये अपने स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान नहीं दे पाती। जिसके कारण मोटापा, शुगर, वसा, उदर वायु, कफ, सूजन, फेफडों के रोग से पीड़ित होते हैं। जिस भी क्षेत्र में कदम रखते हैं उंचाईयों को प्राप्त करते है। न्यायधीश, धर्मगुरु, कंपनी चेयरमैन, मैनेजर, बैंक मैनेजर जैसे पदों को प्राप्त करते हैं। वैवाहिक जीवन भी इनकाशानदार रहता है।

स्वत्वाधिकारी ***'बात हिन्दुस्तान की'*** *(पाक्षिक) पत्रिका के लिए मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती सोनी कुमारी झा, 23 रामकुमार गांगुली लेन, 2रा तल्ला कमरा नं. 203, पोस्ट- बी. गार्डेन, शिवपुर, हावड़ा-711103 (प. बंगाल) फोन न.: 8902221434 से प्रकाशित एवं चपला मुद्रण, 2/3/1, रामजी हजरा लेन, हावड़ा-711101 से मुद्रित, सम्पादक-* ***उमेश तिवारी,*** *फोन- 8420899919 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी , ईमेल/वेबसाईट-www.baathindustanki@gmail.com*

(Owner, Printer & Publisher of 'Baat Hindustan Ki' : Smt. Soni kumari Jha, 23, Ramkumar Ganguly Lane, 2nd floor, room no-203, PO : B.Garden, Shibpur, Howrah-711103, Mo. 9798848926 & Printed from CHAPLA MUDRAN 2/3/1 Ramji Hazra Lane, Shibpur, Howrah-711101, Editor : **Umesh Tiwari** Mo. 8420899919, Email/Website : www.baathindustanki@gmail.com)